सुशीला देवी दक्षिणा

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

प्राचीन काल में गोलोक धाम में सुशीला नाम की एक गोपी थी। वे श्रीराधा की प्रधान सखी एवं श्रीहरि की प्रियतमा थी। वे अतिशय सुन्दरी, साध्वी, कोमलांगी, विद्यागुण सम्पन्न, रूपवती, कृष्णभावानुरक्ता एवं कृष्ण भावाभिज्ञा, एवं रासेश्वर की रासलीला की रसाभिज्ञा भी थी। एकबार रसिकतावश रासलीला से पूर्व सुशीला श्री राधिका से आगे निकलकर श्रीकृष्ण की बाँयी गोद में उपविष्ट हो गयी। यह देखकर श्रीराधिका के अत्यंत क्रोधान्वित होने पर, तब वह राधा के भय से नतमुख हो गयी। सर्वोत्तमा माननीया के क्रोध से रक्तवर्ण स्वरूप एवं कटुवाक्य प्रवाचनोन्मुख होकर वेग से आते हुए देखकर उनके अभिप्राय को समझकर विरोधभय से श्रीकृष्ण तत्क्षण अन्तर्हित हो गए। शान्त मूर्त्ति, सत्वनिलय, सुन्दराकृति भगवान को भय से पलायन करते हुए देखकर सुशीला एवं अन्य सभी गोपियाँ भय से कंपित हो उठी। तब लक्ष-कोटि गोपीगण श्रीमति राधिका के क्रोध से उत्पन्न संकट पर विवेचना हेतु भक्तिभय के साथ कृतांजलि द्वारा भक्तिविनम्र नतमस्तक होकर ''हे देवी! हे देवी! रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए'' इस प्रकार बारम्बार कहते हुए उनके चरणकमल पर शरणागत हो गयी। यही नहीं श्रीदामा-सह त्रिलक्ष कोटि गोपगणों ने भी भयाक्रांत होकर श्रीराधा के पदसरोज पर शरण ग्रहण किया। परमेश्वरी राधा जगतपति, राधाकांत के पलायन से अवगत होकर पलायनपरायण सहचरी सुशीला को शाप दिया – ''आज के बाद सुशीला गोपी ने यदि गोलोक में कदम रखा, तब प्रवेश करते ही वह भस्म हो जाएगी।'' इस प्रकार शाप देकर रासेश्वरी, रासमण्डल में ही रासबिहारी को क्रोध से आवाहन करने लगी। किन्तु श्री कृष्ण के दर्शन न प्राप्त होने पर तब प्रेम विह्वल होकर विलाप करने लगी।

इधर सुशीला देवी गोलोक से पतित होकर, दीर्घकाल तपस्या के पश्चात् वैकुण्ठ गमन कर महालक्ष्मी के काया में प्रविष्ट हो गयी। उसी समय बहुकृच्छसाध्य यज्ञोपरांत फलविहीन होकर देवगणों ने विपन्न भाव से ब्रह्माजी के पास गमन किया। तत्पश्चात् विधाता एवं देवताओं के अभिप्राय से अवगत होकर ब्रह्माजी ने जगतपति श्रीहरि का चिंतनपूर्वक ध्यान कर उनका प्रत्यादेश प्राप्त किया। तब भगवान नारायण ने सुशीला को महालक्ष्मी के अंतर से निष्क्रमित कर मनुष्यगणों की लक्ष्मीरूपी 'दक्षिणा' के रूप में ब्रह्माजी को प्रदान किया। ब्रह्मा ने सत्कर्म समूहों की संपूर्णता हेतु 'दक्षिणा' को 'यज्ञ' के हस्त में सम्प्रदान किया। (सृष्टि के प्रारंभ में देवगणों ने ब्रह्माजी से निज (देवोंका) आहार निर्धारण करने को कहा। ब्रह्माजी इन सबों से सहमत होकर श्रीहरि की सेवा में प्रस्तुत हुए। ब्रह्माजी की प्रार्थना सुनकर, श्रीहरि ने ''यज्ञ'' रूप धारण किया एवं श्री हरि के निर्देशानुसार ब्रह्माजी ने यज्ञ के निमित्त प्रदत्त हवि देवगणों के आहार हेतू निर्धारित किया। ''यज्ञ'' विष्णु का पूर्णावतार है।) यज्ञ ने भी विधिवत दक्षिणा का पूजन कर लक्ष्मी स्वरूपिणी दक्षिणा को स्तुति की।

लक्ष्मीरूपी दक्षिणा देवी का वर्ण शुद्ध स्वर्ण की तरह है, उनकी अंगों की कांति कोटिसूर्यसमप्रभ है। ये सुन्दरी, अतिशय कमनीय, मनोहारिणी वदना प्रफुल्ल कमल सदृश है। कमला देवी के अंग से उत्पन्न पद्मयोनि की पूजनीया कमल विशाल-लोचना इस देवी के अंग सुकोमल हैं। वे अग्नि द्वारा पवित्र वस्त्र परिधान करती हैं। कस्तुरी बिन्दु सहित सुगन्ध चंदन उनके अंगों में विलेपित है। ये सर्वदा नाना रत्नों से अलंकृत होकर सुन्दर वेश एवं सुन्दर भाव में सब को मनमोहित करती है। कामदेव की आधाररूपिणी दक्षिणा का दर्शन कर यज्ञ मूर्छित हो गए। तदन्तर विधिपूर्वक उनका पाणिग्रहण किया। तत्पश्चात् निर्जन कानन में सहस्र देव वर्ष तक परमानन्द में रमणानन्द में काल यापन किया।

तदन्तर दक्षिणा ने कर्म समूहों के फलस्वरूप पुत्र-प्रसव किया। कर्म परिपूर्ण होने पर उनके संतान फल प्रदायक होते हैं। वेदवेत्ताओं के अनुसार सकल कर्मों यज्ञ, दक्षिणा एवं उनके पुत्र – फल द्वारा अपने अभीष्ठित कर्म समूहों के फल प्राप्त करते हैं। इस तरह यज्ञ एवं दक्षिणा फलरूपी पुत्र प्राप्त करके सभी कर्मों के फल प्रदान करने लगे। तब मनोरथ पूर्ण होने पर आनंदित चित्त से देवगणों ने अपने-अपने स्थान को गमन किया। यज्ञ के पुत्रगण ही स्वयंभू मन्वन्तर में ''याम''

नामक प्रसिद्ध देवगण थे।

सृष्टि तत्त्वसार :– मानवलोक के कर्म एवं कर्मों के फलदाता के रूप में यज्ञ दक्षिणा एवं यामदेवगण अधिष्ठित हैं। इस विश्व के सृष्टिकर्त्ता भगवान नारायण एवं शक्तिसत्तारूपिणी भगवती देवी लक्ष्मी बहु अंशों में विराजमान रहकर सृष्टि की धाराक्रम को उसी अनादि लक्ष्य की ओर युक्त करने के लिए सृष्टि की रक्षा करते आ रहे हैं। यज्ञरूपी नारायण एवं दक्षिणारूपी लक्ष्मी ही यथार्थ रूपेण सर्वजीवधारियों के कर्मफल प्रदान करने वाले देवशक्ति हैं।

(सहायक ग्रंथों :– देवी भागवतम्)

–हिन्दी अनुवाद–मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख